अन्त्येष्टिसंस्कार

Published by :

Welfare Committee Shiv Jee Temple
Kralyar, Rainawari, Srinagar,
Kashmir, J&K — 190003,

प्राक् - कथन

आजकल 'हिन्दू' कहानेवाले आर्यजाति बहुत प्राचीन काल से सभ्य, शिष्ट और मननशील रही है। ऋग्वेद संसार-भर में प्राचीनतम पुस्तक है—यह बात एकदम निर्विवाद है। हमारे यहां धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष - इन चार पुरुषार्थों को प्रश्रय मिला है। और धर्म को सर्वोच्च माना गया है। धर्म क्या है? मीमांसा शास्त्र में लिखा है—

'यतोऽभ्युदय-निश्रेयस सिद्धिः स धर्मः ॥

अर्थात् जिस साधन से व्यक्ति का सर्वांगीण उदय हो और जिस समाज में वह रहता है उसकी वृद्धि हो और व्यक्ति का परलोक भी सुधर जाए उसे ही धर्म कहते हैं। हमारे यहां शरीर के लिए हितकर, पथ्य चीजों का सेवन धर्म है और शरीर बिगाडने वाली वस्तुओं का सेवन अधर्म है - हमारे साहित्य में धर्म का प्रतिपादन करने वाली पुस्तकें मौजूद हैं। इन्हें धर्म-शास्त्र कहते है। हमारे धर्म-शास्त्रों में 'भ्रूण' (एमब्रियो) बनने से लेकर 'मृत्यु' तक व्यक्ति को सुधारने वाले साधनों का निदेश है। इन साधनों को हमारे शास्त्रों में संस्कार सोलह हैं। इन में से 'उपनयन' (मेखला) और 'विवाह' अधिक प्रधान हैं। हमारे आचार्य मानते थे कि माता के गर्भ में भी बच्चे पर प्रभाव पड़सकता है। तभी तो 'गर्भाधान' 'पुंसवन' और 'सीमान्तोन्नयन' जैसे संस्कारों का विधान है। यह संस्कार अब मेखला के दिन एक ही साथ किए जाते हैं ताकि हम यह न भूलें कि हमारे ऋषि-मुनियों ने किन किन संस्कारों का विधान हमारे लिए दिया था। अन्यथा बे मौके इनसे कोई लाभ नहीं। हिन्दू का अन्तिम संस्कार 'अन्त्येष्टि' है। जब आत्मा पार्थिव शरीर को छोड जाती है तो मृतक का निकटतम संबन्धी (और सपुत्र) या उसके अभाव या अनुपस्थिति में और कोई सम्बन्धी इस संस्कार को सम्पन्न करता है इस संस्कार से कोई ऐहलौकिक लाभ नहीं अपितु मृतक को शान्ति एवं सुविधा मिलता है। 'अन्त्यष्टि संस्कार' एक कर्म है। कर्म का फल करने वाले को भी जिस के लिए कर्म किया जाता है उसको अवश्य मिलता है—यह बात

'कर्म-सिद्धान्त' के अनुसार निर्विवाद है। हम सब के जीवन में कभी न कभी ऐसी घटनाए घटती हैं जिन्हें हम बिना 'कर्म-सिद्धान्त' माने अपने को भी समझा नहीं पाते। श्रीमद्‌भगवद् गीता जी में श्री कृष्णजी ने कर्म को प्रधान माना है। संस्कारों का विधान हमने अपनी परंपरा में प्राप्त किया है। कुछ भी हो संस्कारों की पकड आज भी हम से नहीं जाती क्योंकि हमारी अन्तरात्मा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानती है, कि पूर्वजों से आती हमारी परंपराए एकदम बे-मतलब नहीं हो सकती। दुख की बात है कि लोगों ने गत कई वर्षों से संस्कारों और धर्म-कर्म को 'पोपलीला' कहकर निरर्थ और केवल जीविका-साधन मान कर अवहेलना की। परिणाम यह हुआ कि आजकल संस्कार कराने वाले लोग नहीं के बराबर रह गए हैं। इन संस्करों में पूर्ण आस्था रखने वाले लोग, चाहे उनकी संख्या कितनी कम क्यों न हो, आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं। इन महानुभावों को कई बार विवशता का सामना करना पड़ता है। विशेषकर अन्त्येष्टि संस्कार कराने वाला आजकल बहुत दुर्लभ है। कहीं कोई मिले भी तो वह बहुधा अनभिज्ञ होता है।

अन्त्येष्टि हमारा आखिर संस्कार है। मन्त्रों और औषधियों का प्रभाव बहुत बडा होता है। कई बार लोग अपनी सीमाओं को भूल कर, अपनी, परिमित बुद्धि से हर एक चीज को मापने लगते हैं। इन महानुभावों के सामने भी कई घटनाए ऐसी अवश्य होंगी जिन को समझना या समझाना इनकी बुद्धि से बाहिर है। ऐसी अवस्था में अपनी परिमित बुद्धि को अन्तिम कसौटी मानकर निर्णय देना ठीक नहीं लगता।

धर्मशास्त्री जानता कि उपर्युक्त विवशता को दृष्टि में रखकर स्वर्गीय पंडित जिया लाल जी जाला इस कार्य के प्रेरणा-स्त्रोत रहे उनको हम श्रदान्जली अर्पित करते हैं। और उनके सुपुत्र श्री नरेश कुमार जाला ने संक्षिप्त 'अन्त्यष्टि-संस्कार' का संग्रह, सम्पादन कराके छपवाया है।

इस में चेष्टा की गई है कि कोई भी व्यक्ति इस पुस्तिका के सहारे इस संस्कार को सम्पन्न कर सकें। पाठक महानुभाव से सानुरोध प्रार्थना है कि एक बार पुस्तक को शुरू से लेकर अन्त तक पढ़े स्थान २ पर छोटे अक्षरों में दी हुई शिक्षा को ठीक तरह समझें। 'कलश' और 'चितावास' के चित्रों को अच्छी तरह देखकर उन्हें बनाने का अभ्यास करें। उनके इस पुनीत प्रयास के लिए हम सब उनके अभारी हैं। इस पुण्य कार्य में जिन महानुभावों ने तन से, मन से या धन से सहायता दी है, उन के प्रति अभार-प्रदंशन हमारा कर्तव्य बनता है। विशेषकर कर्मकाण्ड प्रवीण प० जिया लाल जी चकू ने समय समथ पर अपने बहुमूल्य सुझाव तथा तकनीकी निर्देंश देकर इस पुस्तिका के सम्पादन कराने में सहायता दी है। जिन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। श्री त्रैलोकी नाथ बकाया छानपुर निवासी, जिन्होंने हमें सर्वाधिक दान देकर उत्साहित किया उनके हम आभारी हैं। श्री जानकी नाथ राजदान, जिन्होंने इस पुस्तिका के मुद्रण के लिए सर्वाधिक कागज़ हमें दान किया, के प्रति आभार प्रदंशन करते हैं तथा डा० जिन्दा लाल बाला के भी हम अभारी हैं जिन्हों ने भी दान देकर हमारी उत्साह की है।

इस संग्रह के प्रकाशन सम्बन्धी सर्वाधिकार सम्पादकों के अधीन है। अत: कोई महानुभाव इस संग्रह का पूर्नमुद्रण आदि हमारी अनुमती के बिना करने का कष्ट न करें।

सेवक:

रैणावारी - श्रीनगर।
१८ (चैत्र-२०४५) विक्र०)
तथानुसार मार्च 31, 1988 ई०

जानकी नाथ कंडू (प्रबन्धक)
शिवजी मन्दिर
क्रालयार - रैणावारी,
श्रीनगर, कश्मीर - 190003।

अथ ब्राह्मीविद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर मोहं भिन्धि रजस्तमसी भिन्धि प्राकृतपाशजालं सावरणं परिहर सत्वं गृहाण पुरुषोत्तमोसि सोमसूर्यानलप्रवर-परमधामन् ब्रह्मविष्णुमहेश्वरस्वरूप सृष्टिस्थिति संहारकारक भ्रूमध्यनिलय तेजोसि धामासि अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष-सद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं परंब्रह्म-स्वरूप सर्वगत सर्वशक्ते सर्वेश्वर सर्वेन्द्रियग्रन्थि-भेदं कुरु कुरु परमं पदं परामर्शय परमार्गं ब्रह्मद्वारं सरकुमार्गं जहि षट्कोशिकं शरीरं त्यज शुद्धोऽसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदमास्वा-दयाऽस्वादय स्वाहा ॥

[इति ब्राह्मीविद्या]

अन्त्येष्टि के लिए आवश्यक सामग्री

कार्य आरम्भ करने से पहले यह सामग्री अपने सामने रखिये :—

1. दीपक — जो शव के सिर के पास जलता हो, बाहिर निकाल करके गोबर व मिट्टी से लिपे हुए स्थान पर 'आग्नेय कोण' (South East पूर्व-दक्षिण) दिशा के कोने पर तथा 'वायव्ये कोण' (North West पश्चिम उत्त की ओर रखिये ।
2. कफन 12 गज़ लगभग ।
3. नारीवन
4. सिन्दूर
5. शहद
6 यज्ञोपवीत (जन्यू)
7. धूप
8. घी डेढ पाव
9. दूध एक पाव
10. दही एक पाव
11. चावल का आटा डेढ पाव ।
12. ज़ौ का आटा डेढ पाव— (जिस के तीन पिंड बनाइए)
13. जो का दाना डेढ पाव
14. मांस १०० ग्राम या आलू के तीन पीस
15. दर्भ
16. दर्भ के दो पवित्र
17. एक छोटी नारी
18. लकडी के छोटे छोटे टुक्डे
19. दीपक (चोंग) 15
20. दर्भ के विष्ठुर 2 ।
21. टाकू बडा १ (अग्नि के लिए) ।
22. टाकू छोटे 2 ।

23. फोथरी या नैलान की टोकरी 1 ।
24. चावल अर्घ के लिए आधा किलो ।
25. अखरोट 12 । 26. तिल
27. सर्षप 28. बेर (ब्रिय) 29. लकडी का वमुनहूर 'स्रुच' व 'स्रुव'

नोट :- आधा किलो चावल हान्डी में अन्दर चूले पर पकाइए और इस का पीच न निकालिए ।

2. दूसरी हान्ड़ी में मांस या आलू पकाइए ।

3. शव के स्नान के लिए बडे बर्तन (दीगची) में पानी गर्म कीजिए ।

4. चावल के आटे के छः रोटियां बनाइए और आधा आटा लकीरों (Lines) के लिए रखिए ।

क्रिया का आरम्भ

अब लिपे हुए स्थान पर 'पूर्व' (East) की ओर घास के आसन पर बैठिये, तथा चावल के आटे से यह कलश - रेखा बनाइए ।

(चित्र न० १ के अनुसार)

इसके उपरान्त 'ब्रह्म कलश' (न० १) पर दीपक रख कर उसमें एक अखरोट और पानी डालिए और धूप जलाइए। फिर 'भूतपञ्चक' स्थानों पर पांच (5) दीपक रखकर, उनमें अर्घ, फूल व पानी डालिए ।

अब 'दक्षिणी अस्त्राय' (नं० २ स्थान) पर एक नारी तथा 'आमे गायत्री' (नं० ३) के स्थान पर एक दीपक रखकर एक एक अखरोट डालकर पानी डालिए। और फिर 'मध्ये भैरवाय' (नं० ४) के स्थान पर एक दीपक अखरोट व पानी सहित रखिए।

अब जलता दीपक जो शव के सिरहाने पर होगा उठा कर इस लिपे हुए स्थान के (South East) 'आग्नेय कोण' पर रखकर (North West) 'वायव्ये कोण' दिशा की ओर मुख करके रखिए।

फिर जो नई टोपी (मुखजूज़) शव के लिए बनाई गयी है। उस के उपर केसर के तिलक से ॐ लिखिए, तथा शव के चादर (कफन) पर केसर का पानी छिड़किए।

अब कलश पूजा आरम्भ कीजिए।

यह मन्त्र पढ कर (नं० १) पर फूल डालना।

ओं तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्॥ तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्।

यह मन्त्र पढकर 'दक्षिणी अस्त्राय' (नं० २) की ओर फूल व अर्घ डालिए।

दक्षिणी अस्त्राय नमः।

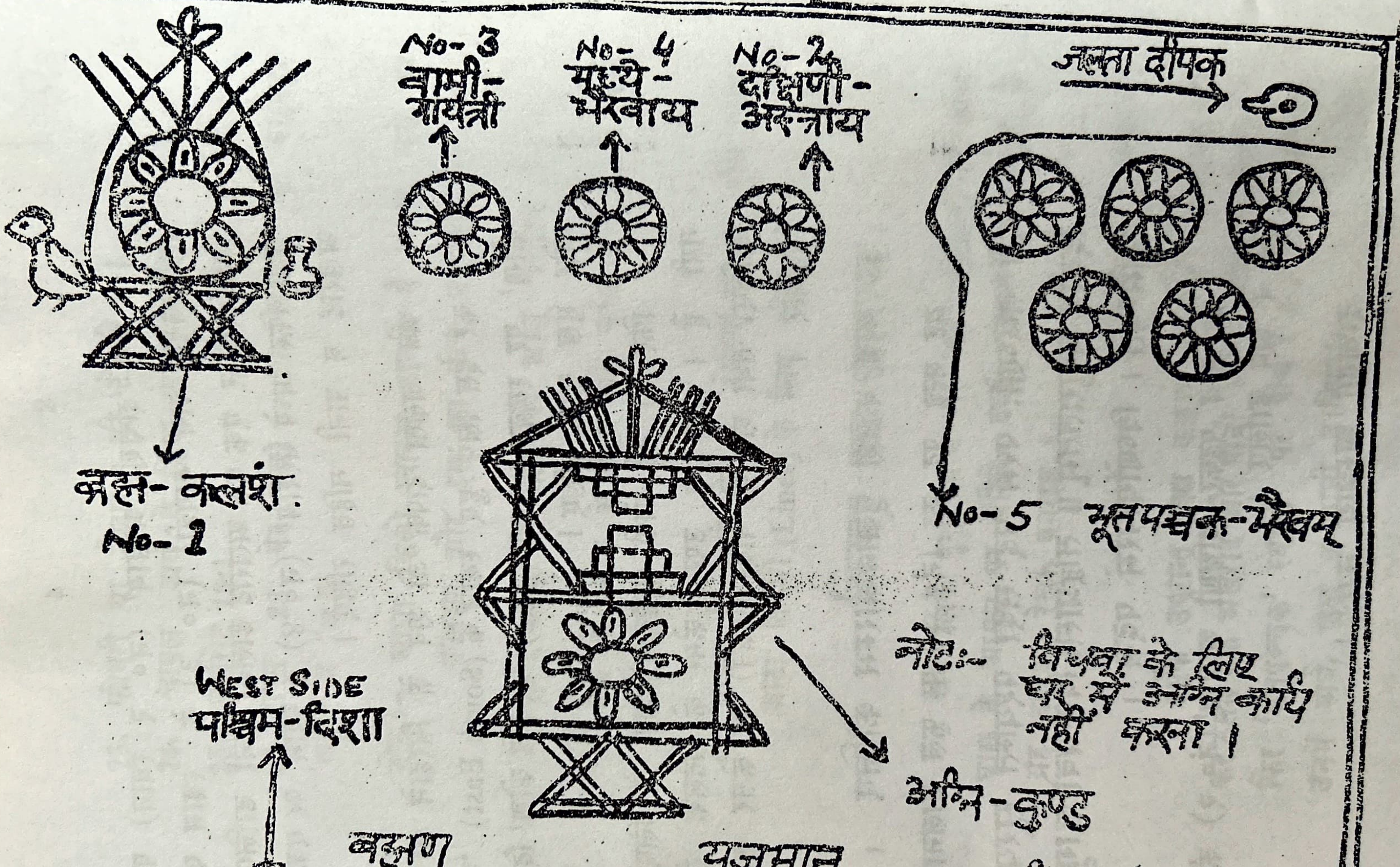
No-3
वामी-गायत्री
No-4
मध्ये-भैरवाय
No-2
जलता दीपक
जल-कलश
No-1
No-5 भूतपञ्चक-भैरवम्
WEST SIDE
पश्चिम-दिशा
नोट:- के लिए घर में अग्नि कार्य नहीं करना।
अग्नि-कुण्ड
यजमान

चित्र नं०-1

फिर गायत्री मन्त्र पढकर वामी - गायत्री (न० ३) की ओर फूल व अर्घ डालिए।

ॐ गायत्र्यै नमः ओम् भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयादों ।

वामी गायत्र्यैं नमः

फिर मध्ये - भैरवाय (न०-४) की ओर फूल व अर्घ डालिए और यह मन्त्र पढिए।

ॐ त्र्म्बकं यजामहे सुगन्धिं रयिपोषणम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

अब भूत-पञ्चक (न० - ५) को यह मन्त्र पढ कर फूल व अर्घ चढाना।

भूत-पञ्चक याग देवताभ्यः अर्घो नमः पुष्पं नमः

अब यजमान को अपने 'ब्रह्माजी' (पुरोहित) अर्थात् कार्य करवाने वाले के दाहिन ओर बिठाए और यजमान अपना जन्यू दाहिने बाजू में (Right side) 'सव्येन' रखकर यह मन्त्र पढिये ।

शुक्लां बरधरं विष्णुं शशि वर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥
अभिप्रेतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि ।
सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
एषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनि ।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ॥

(यह मन्त्र पढकर अपने मुह तथा पैर को जल छिडकाइए)

तीर्थेस्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः शंस्योररूरुषो धूर्तिः प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षाऽणो ब्रह्मणस्पते ॥

अब पवित्र दाहिने (Right) हाथ के तीसरी अंगुली (अनामिका) में डालकर पढिए ।

(इस पवित्र को संभाल के रखना क्योंकि यही श्मशान भूमि पर भी काम में लाना है)

पवित्रं धारयामि नमः

फिर यजमान स्वयं पाने से तिलक लगाये और यह मन्त्र पढे ।

परमात्मने पुरुषोत्तमाय आत्मने नारायणाय
समालभनं गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्पं नमः

जलते दीपक की ओर तिलक, अर्घ व फूल चढाइए और पढिए ।

दीपाय गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः

इसी प्रकार धूप को

धूपाय गन्धो नमः, अर्घों नमः पुष्पं नमः

अब सूर्य भगवान के लिए निर्माल्य के बर्तन में डाल कर पढिए ।

भास्कराय गन्धो नमः, अर्घों नमः पुष्पं नमः

अब यज्ञोपवीत अप्सव्येन बायें बाजू (Left side) में पहिन करके खासू में पानी, अर्घ, विष्ठुर डालकर, उसी से ज़ल डालते हुए निर्माल्य में पानी छोडते हुए पढिए ।

तत्सद्‌ब्रह्माऽद्य मास का नाम, पक्ष का नाम, तिथिः तथा वार का नाम बोलकर पढिये ।

कलश मण्डल, अस्त्र कलश, गायत्री कलश, भैरव कलश, भूतपञ्चक याग देवताभ्यः धूप दीप संकल्पात्सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः ॥

(अब इसी प्रकार खास में जल, तिल डालकर उसी से छोडते हुए पढिए)

तत्सद्ब्रह्माऽद्य मास, पक्ष, तिथिः तथा वार का नाम पढकर बोलिए।

मृतक का नाम व उसके गोत्र का नाम लेकर

अन्त्य क्रिया निमित्ते एषते धूपः एषते दीपः

अब हाथ में दर्भ के दो तिनके लेकर पढिए।

तत्सद्ब्रह्माऽद्य - मास, पक्ष, तिथिः तथा वार गणपत्यादिं कलश मण्डल याग देवतानाम् अर्चीमहं करिष्ये ॐ कुरुष्व

इस दर्भ को निर्माल्य में डालिये

अब नं० 1, 2, 3, 4, और नं० 5 को दर्भ या फूल डालते हुए पढिये।

नं० 1 के लिए :- कलश - मण्डल याग देवतानाम् इदं आसनं नमः।

नं० 2 के लिए :- दक्षिणे - अस्त्रस्य इदं आसनं नमः।

नं० 3 के लिए :- वामे - गायत्रयाः इदं आसनं नमः।

नं० 4 के लिए :- मध्ये - भैरवस्य इदं आसनं नमः।

नं० 5 के लिए :- भूत-पञ्चक याग देवतानाम् इदं आसनं नमः।

और दो दर्भ के तिनके हाथ में लेकर पढिए ।

कलशमण्डल देवताभ्यः, दक्षिणे अस्त्राय, वामी गायत्र्यैं, मध्ये भैरवाय, भूतपञ्चक देवताभ्यः युष्मान्वः पूजयामि ॐ पूजय आवाहश्यामि ॐ गणपत्यादि कलशमण्डल देवतान आवाहयिष्यामि ओं आवाहय ।

पाद धोना, खास में पानी, तिलक, लायया, फूल डालकर विष्ठुर से हर एक को यह पढकर छिडकाइये ।

१ कलशमण्डल, यागदेवताभ्यः पाद्यम् नमः
२ दक्षिणी अस्त्राय ... ...
३ वामे गायत्र्यै, ...
४ मध्ये भैरवाय, ...
५ भूत पञ्चक, ...

मुहं धोना ।

इसी प्रकार खास में पानी, दूध, दही सर्षप, ब्रिय, घी, चावल और जौ के दाने डाल कर विष्ठुर से हर एक को छिडकाये और पढिये ।

१ कलश मण्डल, यागदेवताः इदं वः अर्घ्यं
२ दक्षिणी अस्त्र, ...

३ वामे गायत्री, ...
४ मध्ये भैरव ... ...
५ भूतपञ्चक देवताः ... ...

बीच वाली उंगली से हर एक को तिलक लगाइए।

१ कलश मण्डल, यागदेवताभ्यः समालभनं गन्धो नमः।
२ दक्षिणी अस्त्राय, ...
३ वामी गायत्र्यै, ...
४ मध्य भैरवाय, ...
५ भूत पञ्चक देवताभ्यः, ...

हाथ धोने के बाद हर एक को अर्घ व पुष्प लगाइए

१ कलश-मण्डल, देवताभ्यः अर्घो नमः पुष्पं नमः
२ दक्षिणी अस्त्राय ... ...
३ वामे गायत्र्ये, ...
४ मध्ये भैरवाय, ...
५ भूत पञ्चक, ...

अब खास से शुद्ध जल डालिए। यह मन्त्र पढ़िए और फिर यह पानी निर्माल्य में डालिए।

धूप दीप संकल्पात्सिद्धिरऽस्तु ।

हर एक को फूल चढाते हुए यह मन्त्र पढिये ।

१ कलश मगडल, देवताभ्यः वासो नमः ।

२ दक्षिणे अस्त्राय, ...

३ वामी गायत्र्यै, ...

४ मध्ये भैरवाय, ...

२ भूतपञ्चक देवताभ्यः ... ...

अब जल सब को छिडकाइये और यह मन्त्र ढिये ।

१ कलश मगडल, देवताभ्यः अपोशानं नमः

२ दक्षिणी अस्त्राय, " " "

३ वामे गायत्र्यै, " " "

४ मध्ये भैरवाय, " " "

५ भूत पञ्चक, " " "

अब नौ सिके (Nine coins)) खास में डालकर स में पानी भी होगा, एक एक निकाल कर प्रत्येक ० के सामने रखिए ।

(भूत पञ्चक के पांच स्थान हैं । और पढिये । र प्रत्येक स्थान पर अलग अलग डालना)

१ कलश–मण्डल, देवताभ्यः दक्षिणायै नमः दद्यामि ।

२ दक्षिणे अस्त्राय, ...

३ वामे गायत्र्यै, ...

४ मध्ये भैरवाय, ...

५ भूत-पञ्चक देवताभ्यः ... ...

अब थाल में केवल जल जो बचा है उसे तर्पण कीजिए और पढ़िये ।

तत्सद्ब्रह्माऽद्य, मास - पक्ष, तिथिः, वार, शव का नाम व गोत्र

अन्त्य क्रिया निमित्ते

१ कलश-मण्डल, देवताभ्यः प्रीयन्तां संतु

२ दक्षिणी अस्त्राय ... ...

३ वामे गायत्र्यै, ...

४ मध्ये भैरवाय, ...

५ भूत - पञ्चक, ...

अब केवल (न० १) को फूल चढाइए और पढ़िये ।

तत् विष्णोः परम पदं, सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुरात्तम् द्विप्रासो विपन्यवो जागृ-वांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परम पदम् ।

विधवा और जो गोत्र निरग्नि होते हैं उनके लिये अग्नि क्रिया वर्जित है]

अब बड़े टाकू में थोड़ीसी मिट्टी, फिर लकडी के कुछ टुकडे रख कर अग्नि जलाए । और अग्नि में तिल डालिए, तथा यह मन्त्र पढिए ।

पात्रं तिला ।

फिर एक दीपक में पानी, तिल, तिलक, फूल डालकर पढिए ।

जिसको प्रणीत पात्र कहते हैं—अग्नि के सामने दाहिने ओर रखिये ।

संव्वः सृजामि हृदयं ससुष्ट मनो अस्तुवः ।
संसृष्टास्तन्वः सन्तुवः संसृष्टः प्राणो अस्तुवः ॥
संव्या वः प्रियास्तन्वा संप्रिया हृदयानि वः ।
आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम ॥

अब दो दर्भ के तिनके अग्नि में थोडा जला कर अग्नि कुण्ड के दाहिने तरफ छोडते हुए पढिये ।

निदग्धं रक्षो

प्राणायाम करके प्रणीत पात्र से नौ (६) बार जल से अग्नि को यह मन्त्र पढ कर छिडकाये ।

१ ऋतन्त्वा सत्येन, अग्निं परि समूहामि
२ सत्यन्त्वर्तेन ... ...
३ ऋत सत्याभ्यांत्वा, ...
४ ऋतन्त्वा सत्येन, पर्युक्षामि ।
५ सत्यन्त्वर्तेन, ...
६ ऋत सत्याभ्यांत्वा, ...
७ ऋतन्त्वा सत्येन, परिषिञ्चामि ।
८ सत्यन्त्वर्तेन, ...
९ ऋत सत्याभ्यांत्वा ... ...

अग्नि के चार दिशाओं में (Sides) चार दर्भ काण्ड छोड़िये, और यह मन्त्र पढिये।

पुरुस्तः (East) दक्षिणतः (South) उत्तरतः (North) पश्चातदितिस्तरै (West)

यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि

एक रोटी के पांच टुकडे कीजिए । लकडी के 'स्रुच' के ऊपर एक 'विष्ठुर' रखकर यह मंत्र पढकर रोटी पर डालिए ।

अन्त्य क्रिया निमते जुष्टं निवपामि ।

जुष्टं प्रोक्षामि

फिर दूसरी बार इसी प्रकार

अब घी के टाकू में एक अखरोट, एक सिक्का (Coin) रखिये और आज्यदर्शन यह मन्त्र पढकर कीजिए ।

अन्त्य क्रिया निमते इदं आज्यं अर्पयामि नमः

अब 'स्रुव' से घी अग्नि में डालते समय यह मन्त्र पढिये ।

१ आयुष्यः प्राणं, सन्तनु स्वाहाः ।
२ व्यानात अपानं ...
३ प्राणात् व्यानं ...
४ अपानात् चक्षुः ...
५ चक्षुषः श्रोत्रं ...
६ श्रोत्रात् वाचं ...
७ वाचः आत्मानं ...
८ आत्मानः पृथवीं ...
९ पृथिव्या अन्तरिक्षं ...
१० अन्तरिक्षात दिवं ...
११ दिवः स्वः, ...

एक रोटी का टुकडा बचा कर जो कि तांबे के सिक्के (Copper coin) समेत स्नान के बाद मृतक के मुहँ में डालना है सम्भाल कर रखिये और अन्य टुकडे अग्नि में डालते हुए पढिये]

दक्षिणाय अस्त्राय स्वाहा:, वामे गायत्र्यै स्वाहा: मध्ये भैरवाय स्वाहा:

इस के अतिरिक्त शेष रोटियां पोथरी या नैलान की टोकरी में रखिए इन्हें श्मशान - भूमि में प्रयोग में लाना है ।

अब शव को स्नान के लिए बाहिर अर्थात् 'वुज़' (Corridoor) में निकालिये । और लगाये हुए कपडे निकालिये । इसके पश्चात् नई लंगूठी (स्नान-पठ) लगाइए । फिर मिट्टी तथा सर्द पानी से शौच स्थान साफ कीजिए । फिर पैर धो कर स्नान कीजिए ।

पहले शव के सारे शरीर पर दही मलिए फिर गर्म पानी से अच्छी प्रकार स्नान कीजिए ।

अब बालटी (Bucket) में जल, दूध, दही, घी, सर्षप्, ब्रिय और तिल डालकर शव को बिठाना और घडे से सिर 'पिशाने' (Forehead) पर यह पानी धीरे धीरे डालते जाये, जब तक क्रिया करवाने वाला यह मन्त्र पढ ले ।

. . .

नोट :- यदि कोई सज्जन यह सारे मन्त्र न पढ सकें, तो भी श्लोक न० १ से न० १० तक पढिये। यदि फिर भी यह दस मन्त्र न पढ सकें तो केवल श्लोक न० १० अर्थात् "य एता वन्तो" से "नमो अस्तु, देवाः" पढिये और ओम् नमः शिवाय का जप करते जाये जब तक पानी पूरा न छोडा जाये।

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥१॥
येऽस्मिन्महत्यर्णवेऽन्त रिक्षे
भवा अधि ॥२॥ तेषां ...
ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा
दिवं रुद्रा उपाश्रिताः ॥३॥ तेषां ...
ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः
शर्वा अधः क्षमाचराः ॥४॥ तेषां ...
ये वनेषु शिष्पिञ्जरा नीलग्रीवाः
विलोहिताः ॥५॥ तेषां ...
येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु
पिबतो जनान् ॥६॥ तेषां ...

ये भूतानाम् अधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥७॥
ये पथीनां पथि रक्षय ऐड
मृडाय व्युधः ॥८॥ तेषां ...
ये तीर्थानि प्रचरन्ति
सृकावन्तो निषङ्गिः ॥९॥ तेषां ...
य एता वन्तो श्च भूयां सो
वा दिशो रुद्रा वितष्ठिरे ॥१०॥ तेषां ...

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु
य ओषधीषु यो वनस्पतिषु ।
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः ।

यदि हो सके तो पुरुषसूक्त के श्लोकों को भी पढ़िये । जो नीचे लिखा हुआ है।

ॐ आनुष्टुभस्य सूक्तस्य,
त्रिष्टुबऽन्तस्य देवता ।
विश्वात्मा पुरुषः साक्षादृषि
नारायणः स्मृतः ॥१॥

पुरुष मेधाः पुरुषस्य नारायणस्य आर्षम् ॥

ॐ सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् । स भूमिं विश्वतो
वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम ॥२॥

पुरुष एवेदं सर्वं
यद्भूतं यच्चभव्यम् ।
उतामृत त्वस्येशानो यदऽन्ने
नाति रोहति ॥३॥

एतावानऽस्य महिमाऽतो
ज्यायांश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि
त्रिपादऽस्यामृतं दिवि ॥४॥

त्रिपाद ऊर्ध्वं उदैत्पुरुषः
पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विश्वं व्यक्रामत्साशना-
ऽनशने अभि ॥५॥

तस्माद्विराडऽजायत
विराजो अधि पुरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत
पश्चाद्भूमिमऽथो पुरः ॥६॥

यत्पुरुषेण हविषा
देवा यज्ञमऽतन्‌ वत ।
वसन्तो अस्या सीदाज्यं
ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥७॥
तं यज्ञ बर्हिषि प्रौक्षन्-
पुरुषं जातम अग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त
साध्या ऋषयश्च ये ॥८॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वं हुतः
संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यान
आरण्यान् ग्राम्यांश्च ये ॥९॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वं हुत ऋचः
सामानि जज्ञिरे ।
छंदांसि जज्ञिरे तस्माद्य-
जुस्तस्मादऽजायत ।१०॥
तस्माद् अश्वा अजायन्त
ये के चोभादतः ।
गावो ह जज्ञिरे
तस्मात्तस्माज्जाता अजा वयः ॥११॥

यत्पुरुषं व्यदधुः

कतिधा व्यकल्पयन् ।

मुखं किम अस्य कौ वाहू का

ऊरु पादा उच्यते ॥१२॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखम्

आसीद्बाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरु तदऽस्य यद्वैश्यः

पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥१३॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः

सूर्यो अजायत ।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च

प्राणाद्वायुरऽजायत ॥१४॥

नाभ्या आसीद् अन्तरिक्षं

शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा

लोकान अकल्पयन् ॥१५॥

सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः

सप्त समिधः कृताः ।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना

अवध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१६॥

यज्ञेन यज्ञमऽयजन्त

देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त

यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१७॥

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति

सूरयः दिविव चक्षुराततम् ।

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवासां

समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥

अब नया लंगूठी (स्नान पठ) लगाइए, और अच्छी तरह बान्धये । जो पुरुष अथवा नारी शव का स्नान देते हों। इस मन्त्र का उच्चारण करते जाये ।

क्षन्तव्योमेपराधः शिव शिव शिव भो श्री महादेव शम्भोः ।

अब नं०-२ वाली नारी उठा कर शव के दाहिने कन्धे पर उसका केवल जल ही छोडिये और पढिये।

दक्षिणी अस्त्राय स्नानम् नमः

और खाली नारी कोथरी में रखिये ।

अब न० ३ दीपक इसी प्रकार उठाकर केवल उसका जल शव के बाहिने कन्धे पर छोडिये और पढिये।

ओम् भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य

धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयादों ॥

वामी गायत्री स्नानम् नमः

यह खाली दीपक न० ३ कौथरी या नैलान टोकरी में डालना ।

अब न० ४ का जल अथात् मध्ये - भैरव का इसी प्रकार शव के सिर पर डालते हुए पढिये ।

ॐ त्र्म्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

यह खाली दीपक भी इसी प्रकार कौथरी में रखिए ।

यदि शव 'पुरुष' हो तो नया यज्ञोपवीत् (जन्यू) पैरों से चढा कर डालिये और 'अपसव्येन' बायें बाजू में (Left side) रूप में रखिये ।

अगर शव 'स्त्री' हो तो 'नारीवन' बाहिने कान में फंसाना ।

इस के पश्चात् शव के 'नौ द्वारों' में पहले से बनाये गये धूप के नौ गोल टुकडों को फंसाना (अर्थात् अन्दर डालना)

यह 'नौ द्वार' इस प्रकार हैं :-
दो आखें, दो कान, दो नकवारे, एक मुहं, एक जलस्थान और एक गुह्यस्थान ।

फिर शहद को शव के पैरों तले मलना (निचले वाले भाग पर) और शव के दाहिने हाथ के अनामिका उंगली में एक 'पवित्र' फंसाना (Ring finger of right hand) इस के बाद एक तांबे का सिक्का (Coper coin) उस रोटी के टुकडे के साथ शव के मुहं में रखना, जो इस कार्य के लिए संभाल के रखा है । अब शव को वस्त्र लगाने से पूर्व 'राम राम पट' लगाये । अब जामा (नये-वस्त्र) लगाना, फिर 'पुलहोर' लगाना, जिसमें पहले से रोई (Cotton) भरी हुई होगी । लेकिन, ध्यान रखिये कि 'पुलहोर' इस प्रकार शव के पैरों में लगाये कि शव के दाहिने पैर में 'पुलहोर' का बाहिना पैर लगे और शव के बाहिने पैर में दाहिना 'पुनहोर' का पैर लगे ।

फिर 'राम राम पट' पहिना दीजिए यह 'पेट' तथा 'नाभिस्थान' तक ही रखना चाहिए । अब सिंदूर का तिलक और फिर अग्नि का तिलक लगाना और फिर 'नारिवन' लगाना, पुरुष को दाहिने तथा स्त्री को बाहिने 'बाजू' (Wrist) में बान्धना ।

वस्त्र धारण कराने का तरीका

वस्त्र अर्थात् 'जामे' को शव के कन्धे तले रखिये, पहले एक बाजू फिर दूसरे बाजू में डालना, फिर नीचे से वस्त्र को खींचना, यह वस्त्र पैरों तक जा पहुँचेगा, अब पैरों को बान्धना. और फिर बाजू को भी बान्धना,

और बाजू को फिर छाती पर बान्धकर शव के सिर पर 'मुखजूज़' (नई टोपी) लगाइए और धीरे धीरे तख्ते पर रखिये। तख्ते पर रखकर ऊपर सफेद कपडे की चादर डालिये। शव को तख्ते समेत आंगन में निकालिए और शव का सिर दक्षिण (South side) की ओर होना चाहिए।

यदि कोई महिम्नः स्तोत्र पढसके तो पढिये।

अब आर्ती कीजिए। रत्नदीप, धूप, कपूर इत्यादि जलाये।

आर्ती से पहले घर की किसी कन्या के हाथों द्वारा शव के ऊपर भुन्ना हुआ शाली के दाने (लायि), या (पलियां) और लोहे का चूरा डालिए।

और अब आर्ती आरम्भ कीजिए सब के हाथों में फूल और क्रिया करने वाले के हाथ में रत्नदीप होना चाहिए, और पढिये।

जय नारायण जय पुरुषोत्तम

जय वामन कंसारे

उद्धर माम सुरेश विनाशिन्

पतितोहं संसारे।

घोरं हर मम नरक रिपो

केशव कल्मष भारं

मां अनुकम्पय दीनं अनाथं

कुरु भव सागरपारम् ॥१॥

जय जय देव जया सुर सूदन

जय केशव जय विष्णो

जय लक्ष्मी मुख-कमल मधुव्रत

जय दशकन्धर जिष्णो ।

घोरं हर मम नरक रिपो

केशव कल्मष भारं

मां अनुकम्पय दीनं अनाथं

कुरु भव सागरपारम् ॥२॥

यद्यपि सकलं अहं कलयामि हरे

नहि किम् अपि स सत्त्वम्

तत् अपि न मुञ्चति मामिदं

अच्युत पुत्र कलत्र ममत्त्वं ।

घोरं हर मम नरक रिपो ॥३॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं

पुनरपि गर्भनिवासम् ।

सोढुम अलंपनर अस्मिनमाधव
माम उद्धर निजदासम्
घोरं हर मम ॥४॥

त्वं जननी जनकः प्रभुरच्युत
त्वं सुहृत्कुलमित्रम्
त्वं शरणां शरणागतवत्सल
त्वं भवजलधि वहित्रं
घोरं ॥५॥

जनक सुता पति चरण परायण
शंकर मुनिवर गीतं
धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम
वारय संसृति भीत्तिम् ।
घोरं हर मम नरकरिपो
केशव कल्मषभारं
मांअनुकम्पय दीनं अनाथं
कुरु भव सागर पारम् ॥६॥

अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली
कृतताडन परिपीडन मरणा गमसमये ।

उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्
शिव शंकर शिव शंकर हर मे हर दुरितम् ॥१॥

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपुसञ्चय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खल गर्हण चलिते ।
शिवया सह मम चेतसि शशिशेखर निवसन्
शिव शंकर ... ... ॥२॥

भवभञ्जन सुररञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन ।
गिरजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिव शंकर ... ... ॥३॥

शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये
कल विग्रह भव दुर्ग्रह रिपु दुर्बल समये
द्विज क्षत्रिय वनिता शिशु दरकम्पित हृदये
शिव शंकर ... ... ॥४॥

भव संभव विविधामय परि पीडित वपुषं
दयितात्मज ममताभर कलुषी कृत हृदयम् ।
कुरू मां निज चरणार्चन निरतं भव सततं
शिव शंकर ... ... ॥५॥

आ किं न रक्षसि नयत्ययमन्तको मां
हेलावलेपसमयः किमयं महेश ।
मा नाम भूत्करणीया हृदयस्य पीडा
व्रीडापि नास्ति शरणागतमुज्झतस्ते ॥

अब खडे होकर ही पढिये :।

तत्सद् ब्रह्माऽद्य - मास०, पक्ष०, तिथिः, वार, शव का नाम तथा गोत्र समेत तस्य स्वर्ग प्राप्त्यर्थं धूपं रत्नदीपं, कर्पूरं अर्पयामि नमः

ब्रह्म - कलश को अच्छिद्र इस प्रकार कीजिए, दो दर्भ के टुकडे हाथ में लेकर पढिये ब्रह्म कलश मण्डल याग देवतानाम् अच्छिद्रं सम्पूर्ण अस्तु । और दो दर्भ के टुकडे निर्माल्य में डालिए ।

सन्तान या क्रिया करने वाला अपने कमर में तोलिया (Towel) बान्धे और अपना 'जन्यू' अपसव्येन स्थिति में रखिये

नोट :- अब घर से शव की अर्थी को विदा करना है । निकलने से पूर्व घर के 'वुज' Coridoor) में दरवाजे के दूसरे तरफ (towards opposite side of door) एक जलता दीपक एक कोने में रखिये जो श्मशान भूमि से आकर ही बुजाना है ।

पहले से बनाये गये तीन 'जौं' के पिण्डों में से एक को इस प्रकार चढाना है और शेष कोंथरी में रखने हैं। इस पिंड को अन्तिम यात्रा से पूर्व शव के सिर पर हाथ से पकड कर यह मन्त्र पढते हुए रखिए तत्सद्ब्रह्माऽद्य - मास०, पक्ष०, तिथिः वार, शव का नाम व गोत्र पढ कर फिर टोकरी में रखिए।

एषतेः बोधः पिण्डः

फिर सन्तान या क्रिया करने वाला सब से पहले शव के तख्ते को अपने दाहिने कन्धे से उठाये और अन्य पुरुष फिर इस शव समेत तख्ते को अन्तिम यात्रा की ओर प्रस्थान करें। ओम् नमः शिवाय का नाम लेकर रास्ते में इस मन्त्र का उच्चारण करियें

क्षन्तव्योमिपराधः शिव शिव शिव भो श्री महादेव शम्भोः

मन्दिर पहुँचते ही या आधे रास्ते पर दूसरा 'जौं' का पिण्ड इसी प्रकार चढाइए और यहां यह मन्त्र पढिये।

तत्सद्ब्रह्माऽद्य - मास०, पक्ष०, तिथिः, वार शव का नाम व गोत्र पढकर

एषतेः मकरद्वजः पिण्डः

और श्मशान भूमि में पहुँचकर तीसरा पिण्ड यह मन्त्र पढते हुए चढाये।

चित्र नं०-2

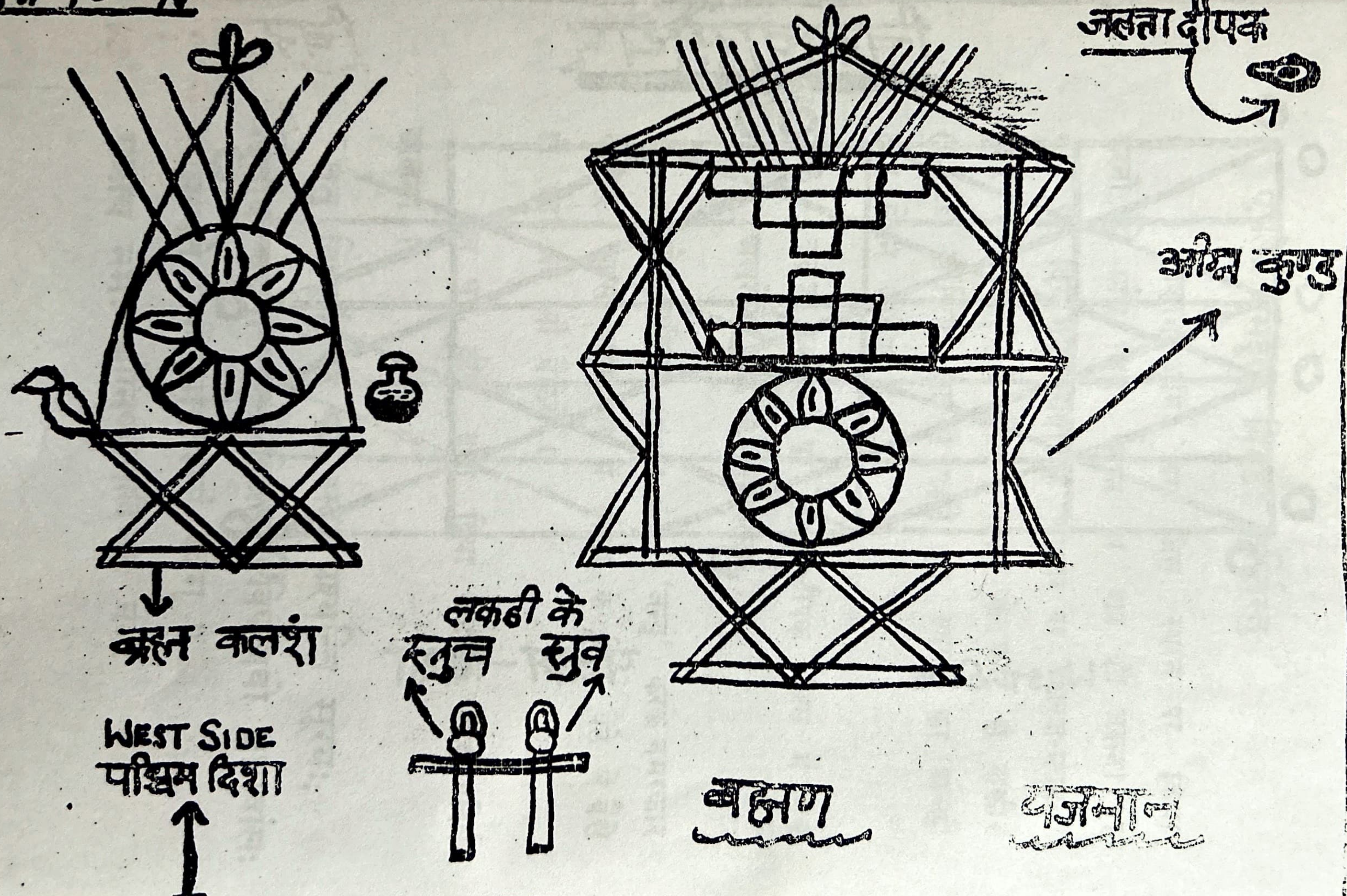

जलता दीपक
अग्नि कुण्ड
कलश
लकडी के
स्त्रुच
स्त्रुव
WEST SIDE
पश्चिम दिशा
ब्रह्मण
यजमान

चितावरोहण

चित्र नं०- 3

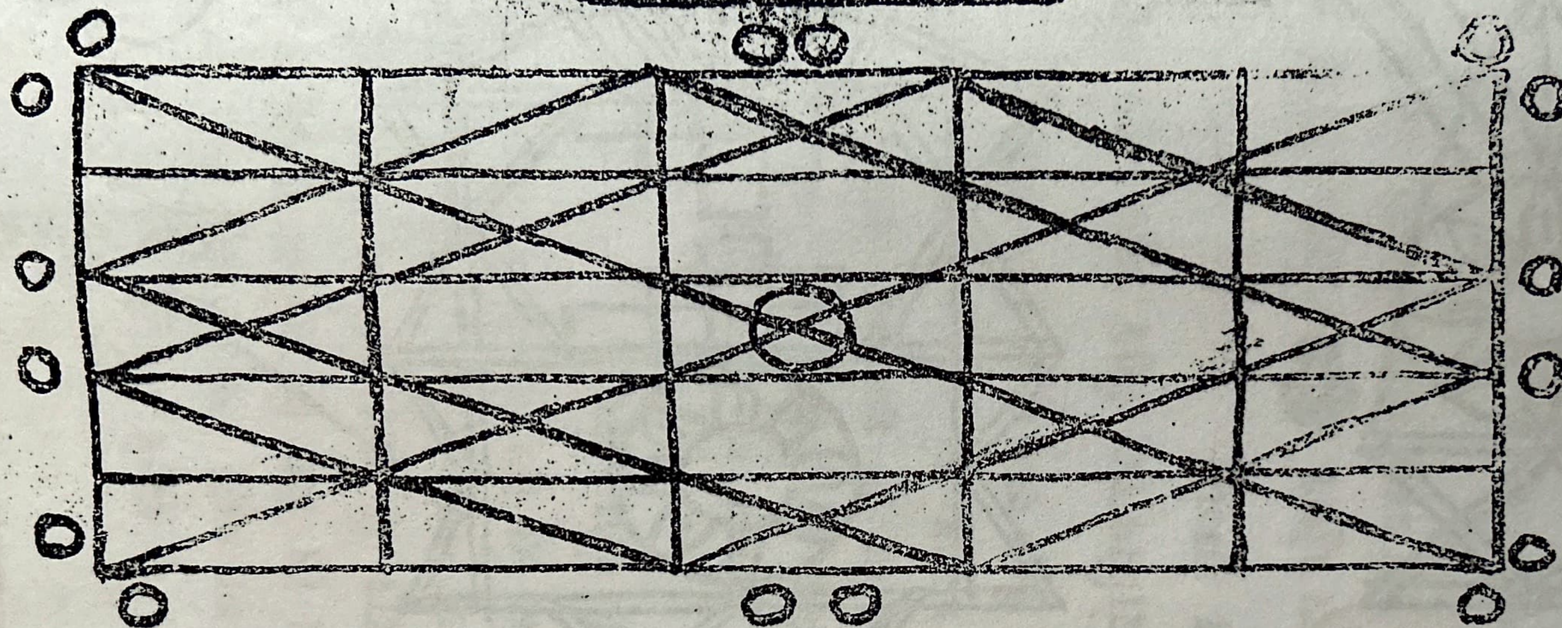

WEST SIDE

पश्चिम - दिशा

एषते: यमदूत: पिण्ड: तृप्तिस्तु

श्मशान भूमि: पर जिस स्थान पर क्रिया करनी हो और जिस स्थान पर शव को जलना हो यहां पर दिये गये चित्रों के आधार पर 'कलश-मण्डल' और 'चितावास्तु' के लिए चावल के आटे से लकीरें (Lines) खींचिये, इस से पहले इन स्थानों का अच्छी तरह लेपन कीजिए।

नोट :- कलश मण्डल पर एक दीपक जिस में एक अखरोट और जल डालना है।

सव्येन दाहिना (right side) 'जन्यू' करके नमस्कार कीजिए। जैसे आप घर में क्रिया के लिए बैठे थे वैसे ही यहां पर भी बैठिये।

अब धूप, दीप तथा दिया जलाना, फिर पवित्र डालना।

तत् विष्णोर् परं पदं सदा पश्यन्ति सूरय:,
दिवीव चक्षुराततम्। द्विप्रासो विपन्यवो जागृवांस:
समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥
यमाय नम: अग्निष्वात्तादिभ्य: नम:

अपसव्येन (बाहिना) 'जन्यू' करके क्रिया आरम्भ कीजिए हाथ में पानी डालते हुए पढिये ।

तत्सद्ब्रह्माऽद्य - मास०, पक्ष०, तिथि वार शव का नाम व गोत्र पढ कर

यमाय अग्निष्वात्तादिभ्यः धूपोनमः, दीपोनमः

दर्भ के दो टुकडे हाथ में लेकर बोलये :
तत्सद्ब्रह्माऽद्य - मास०, पक्ष०, तिथिः, वार शव का नाम व गोत्र पढ कर यह बोलये :

यमस्य अग्निष्वात्तादीनाम अर्चां अहं करिष्ये ओम् कुरुष्व

और यह दो दर्भ निंमाल्य में डालिये । अब दो दर्भ फिर हाथ में लेकर पढिये

यमस्य अग्निष्वातादीनाम इदं आसनं नमः ।

और यह दो दर्भ कलश के सामने डालिये इसी प्रकार फिर दो दर्भ हाथ में लेकर पढिये और पढकर यह दो दर्भ के टुकडों को निंमाल्य में डालिए।

यमाय अग्निष्वातादिभ्यः त्वां पूजयामि ॐ पूजय

यमं अग्निष्वात्ता दीन् आवाहयिष्यामि,
ॐ आवाहय ।

एक और दीपक में पानी, तिलक, फूल, अर्घ तथा विष्ठुर डालकर इस विष्ठुर से कलश को छिडकाये और पढिये ।

यमाय अग्निष्वातादिभ्यः पाद्यं नमः
अर्घयम् नमः

अब कलश को तिलक लगाये, फिर हाथ दोह लीजिए
समालभनं गन्धोः नमः

कलश को फूल लगाना
अर्घो नमः पुष्पं नमः

हाथ में पानी रखकर पढिये
दीपो नमः धूपो नमः

और यह पानी निर्माल्य पात्र में डालिये
फिर फूल लगाना
वासो नमः

फिर थोडा पानी डालकर बोलना
आपोशानं नमः

फिर दक्षिणा डालना यदि पैसा (coin) न हो तो फूल ही डालना और पढिये।

यमाय अग्निष्वात्तादिभ्यः दक्षिणायै नमः

और पानी से तर्पण करना

तत्सद्ब्रह्माऽद्य - मास०, पक्ष०, तिथिः वार, शव का नाम व गोत्र

तस्य परलोके स्वर्ग प्राप्तिरस्तु

कलश पर पैसा (coin) या फूल डालकर बोलिए

एता देवता प्रीतास्तु

अब अग्नि जलाना

अग्नि मण्डल पर घर से लाया हुआ जलता हुआ टाकू रखिये और उपर थोडी सी और लकडी रखिये। इस अग्नि में थोडा सा तिल डालना और अग्निकोण 'प्रणीत पात्र' के लिए पढिये।

संठ्वः सृजामि पात्रम् तिला घृतमिश्रं ।

अग्नि को तिलक, अर्घ व फूल लगाना।

अग्नि के (south west side) पर 'प्रणीत पात्र' (एक दीपक में पानी तिलक, फूल और विष्ठुर रखिये) विष्ठुर से अग्नि को नौ (Nine) बार जल की छींटें लगाये और यह मन्त्र पडिये।

१ ऋतन्त्वा, सत्येन अग्निं परि समूहामि

२ सत्यन्त्वर्तेन ... ...

३ ऋत सत्याभ्यांत्वा ... ...

४ ऋतन्त्वा, सत्येन पर्युक्षामि

५ सत्यन्त्वर्तेन ... ...

६ ऋत सत्याभ्यांत्वा ... ...

७ ऋतन्त्वा, सत्येन परिषिञ्चामि

८ सत्यन्त्वर्तेन ... ...

९ ऋतसत्याभ्यांत्वा, सत्येन परिषिञ्चामि

दर्भ का एक एक टुकडा अग्नि के चार दिशाओं में डालिए ।

१ पूर्व (East side) पुरस्तः

२ दक्षिण (South side) दक्षिणतः

३ उतर (North side) उतरतः

४ पश्चिम (West side) पश्चातदितिरतरै:

एक रोटी और जौ समेत अर्घ अपने सामने रख कर उस पर 'स्रव' से थोडा सा जल प्रणीत पात्र को डालिये और पढिये ।

(रोटी को) यमाय अग्निष्वातादिभ्यः यव तिल

जुष्टं निर्वपामि, जुष्टं प्रोक्षामि

अब 'स्रुव' से अग्नि में घी डालते हुये यह मन्त्र पढ़िये ।

१ आयुष्यः प्राणं सन्तनु स्वाहाः

२ व्यानात अपानं ... ...

३ प्राणात् व्यानं ... ...

४ अपानात् चक्षु ... ...

५ चक्षुषः श्रोत्रं ... ...

६ श्रोत्रात् वाच्यं ... ...

७ वाच्यः आत्मानं ... ...

८ आत्मानः पृथ्वीं ... ...

९ पृथिव्या अन्तरिक्षं ... ...

१० अन्तरिक्षात् दिवं ... ...

०० दिवास्वः ... ...

जिस रोटी और 'यव-तिल' को अपने सामने रखा है । यह मन्त्र पढ कर अग्नि में एक एक करके डालिए ।

रोटी - यमाह स्वाहाः ।
यवतिल - अग्निष्वात्तादिभ्यः स्वाहाः

इस चित्र न० ३ के अनुसार चितावास्तु को चावल के आटे से वनाये । यह लगभग ५ फुट (5 feet long) लम्बा होना चाहिए, अर्थात् शव के लम्बाई के अनुसार या समयानुसार लकीरें खींचिये ।

इस मन्त्र से चितावास्तु को जल से छिडकायें।

संध्यः सृजामि । अश्विनो: प्राणास्तौते

चितावास्तु के सामने पूर्व (East) की ओर मुहं करके दो दर्भ के टुकडों को हाथ में रखकर पढिये और चितावास्तु पर डालिए ।

चितावास्तु देवतानाम् अर्चाम् अहं करिषे ॐ कुरुष्व ।

फिर इसी प्रकार दो दर्भ हाथ में रखकर पढिये और यह चितावास्तु के सामने डालिए।

अन्त्य क्रिया निमित्ते चितावास्तु देवतानाम् इदं आसनं नम:

फिर इसी प्रकार दो दर्भ हाथ में लेकर पढिये और निर्मालय में डालिए ।

चितावास देवताभ्यः त्वां पूजयामि ओम् पूजय चितावास्तु देवतान् आवाहयिष्यामि ।

पानी डालते हुए पढिये जिसमें तिलक और फूल हो

चितावास देवताभ्य: पाद्यम् नम:

अब नया पानी जिस में घी, जौ हो, डालते हुए पढिये ।

चितावास्तु देवताः इदर्वोर्घ्यं नमः

चितावस को तिलक, अर्घ, फूल चढाना।

तिलक :–

चितावास देवताभ्याम समालभनं गन्धो नमः

अर्घ व फूल :-

चितावास देवताभ्याम् अर्घो नमः पुष्पं नमः

हाथ में पानी डालते हुए पढिये

दीपो नमः धूपो नमः

यदि शाल हो या सफेद चादर चितावस पर रख कर बोलिए (वस्त्र के उपर जल छिडकें) और थोडा पानी डालिए

वासो नमः आपोशानं नमः

फिर दक्षिणा डालना

दक्षिणायै नमः

चितावास पर जहां गोल O निशान लगे हैं। वहां पक्का हुआ अन्न, मास या आलू सहित डालिये और पढिये।

चितावास्तु देवताभ्यः बलिं समर्पयामि नमः

चितावास पर आधी लकडी रखकर शव को इस पर रखिये।

चितावास पर आधी लकडी रखकर 'शव' को इस पर रखिये। शव का सिर दक्षिण की ओर (south) रख कर मुहं पुर्व (East) की ओर करिये। दूसरी सफेद चादर को गीला करके 'शव' के ऊपर डालिए और फिर ऊपर लकडी रखिये।

(उल्मुख बनाना)

अब तीन बडे लकडी के टुकडों के एक सिरे पर कपड़ा या रूई लगाये, फिर घी से गीला करके अग्नि के टाकू पर जलाये और चितावास को अग्नि प्रवेश कीजिये, जिस प्रकार नीचे दिखाया गया है। यह 'उल्मुख' कोई भी पुरुष उठा सकता है।

चिता के ~~पश्चिम~~ दक्षिण (South side) पर एक कुलहाडी या पत्थर रखिये।

१ निचले (foot side North - East) ओर उल्मुक रखकर पढिये

आकूत्यैत्वा स्वाहा

२ निचले (foot side North - ~~East~~ West) ओर उल्मुक रखकर पढिये

कामेयत्वा स्वाहा

३ कन्धे के नीचे उल्मुख रखकर पढिये (South West).

समृद्धयैत्वा स्वाहा

अब अन्त में शव के सिर के नीचे जलता हुआ दीपक तथा अग्नि का टाकू रखियें। फिर चिता को अच्छी तरह

जलाये। कुछ समय के पश्चात् जब कापालिक (कावुज) बोलेगा अथवा जब शव लगभग आधा जला हो, तो घर से लाई हुई (दक्षिणी अस्त्राय) वाली नारी में पानी भर कर चिता का तीन परिक्रमा करके उसे 'कुलहाडी' या पत्थर पर शव का नाम लेकर तोडिये जो चिता के पश्चिम (South) पर होगी।

फौथरी, स्रुच, स्रुव तथा पवित्र इस चिता के ऊपर जलाये।

अब दो दर्भ के टुकडों को हाथ में लेकर पढिये शव का नाम व गोत्र लेकर

चितावासुदेवतानाम् अच्छिद्रं सम्पूर्णं अस्तु।

और अग्नि में डालिये।

फिर इसी प्रकार कलश–मण्डल का भी अच्छिद्र करना है। दो दर्भ के टुकडों को हाथ में लेकर पढिये।

शव का नाम व गोत्र पढकर

कलश-मण्डल यागदेवतानाम् अच्छिद्रं सम्पूर्णं अस्तु

तर्पण के लिए सभी नदी पर या उस स्थान पर जाये जहां जल हो

सभी अपने 'जन्यू' को अपसव्येन (Left side) करके दाहिने हाथ में थोडा सा तिल रखकर पानी डालते जाये और पढिये।

तत्सद्ब्रह्माऽद्य—मास०, पक्ष०, तिथिः वार पढ कर शव जो सम्बन्ध हो कह कर अर्थात्

पिता / माता / बान्धव, इत्यादि शव का नाम व गोत्र लेकर

परलोके, वैकुण्ठ पदवी प्राप्तिर्थं एतत्ते तिलोदकम् एतत्ते उदकतंपणम्

फिर घर की ओर चलिये। मन्दिर जाकर स्नान करके, घास जलाना, और उसके तीन परिक्रमा करके ओम् नमः शिवाय का जप कीजिए। घर पहुँच कर जो दीपक 'वुज़' (Corridoor) में जलता होगा उसको बुजा दीजिये।

ओ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः